

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ६४६. घ

Title श्रीरामस्य वेदपदाभिधानं स्तोत्रम्

Author स्व श्रीगंगा स्तोत्रम्
शंकराचार्यः

Extent ६ Age

Subject स्तोत्रम् . सम्पूर्णम्

नं० ६४६-घ

क श्रीरामस्य वेदपादाभिधं सोत्रम्

ख गंगा सोत्रम्

नं० ६४६-घ

पत्राणि २+२+२=६ (सम्पूर्णाग्र)

वर्त्ती शंकराचार्यः

२+२+२=६

नं० ए ४८-घ
श्रीरामस्य वेदपादाभिधानं स्तोत्रम्
श्रीगंगा स्तोत्रम्
पत्राणि २+२+२=६ (सम्पूर्णम्)
कर्ता शंकराचार्यः

॥ १५ ॥ सीता पतेरामरघूत्तमैः को नामा निजल्ये धुधतस्य तत्स्य ॥ १५ ॥
 दिशो द्रव्यं त्येव युयुत्सवोप्येभियं दधाना हृदये पुरातनः ॥ १७ ॥ अनादिमव्यक्तमनंतमाद्यं परं स्वयं न्योति
 षमप्रमेयं ॥ विलोकयेदाशरथे कदात्वा मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ १८ ॥ श्रीराघवस्वीयपदार
 विंदंसे वां भवानः सततं ददातु ॥ वयं स्वजन्मांतरसंचितानि यथातिविश्यादुहितातरे म ॥ १९ ॥ भोचित्तने
 कामयसे विभूतिं त्वमेव संनार्थय वीरमेकं ॥ रघूत्तमश्चीरमणः सदा यश्चीणामुदारो धरुणोरयी
 णां ॥ २० ॥ वंदेर विंदे क्षणमुंबुदभमा कर्णनेत्रा सकुमारगान्त्रा ॥ यं जानकी हर्षवती वने पीप्रियं सरवा
 यं परिष्वजाना ॥ २१ ॥ सीताजानेनैव जानेत्तदन्यं च त्तश्चीरस्त्री पुत्रमायुः कदाहं ॥ त्वां स्मृत्वांते दे
 वयानाधिस्तुतः स्तत्वा यामिब्रह्मणा वंदमानः ॥ २२ ॥ अहं भरद्वाजमुनिर्निरंतरं श्रीराममेकं जेग
 देकनायकं ॥ त्वं वर्णये मुक्तिरसादिवित्तदं कविं कवीनामुपमश्रवस्तमः ॥ २३ ॥ पठंति स्तुतिं येन
 राक्षसिकायाः समृद्धिं चरायुष्यमायुष्यकामाः ॥ लभन्ते च निःसंशयं पुत्रकामा लभन्ते ह पुत्रा
 न् लभन्ते ह पुत्रान् ॥ २४ ॥ वेदपादाभिधंस्तोत्रं ज्ञात्वा भक्त्या सद्धं नरः ॥ यः पठेद्वाघवस्याग्नेजी
 वातिशरदः शतं ॥ २५ ॥ इति श्रीभरद्वाजकृष्णोक्तं रामचंद्रपरं वेदपादाभिधंस्तोत्रं संपूर्णं ॥ श्री
 गणेशाय नमः ॥ समृद्धं सौभाग्यं सकलवसुधायाः किंप्रपितमहैश्वर्यं लीलाततुंग
 तः रत्नद्वयं शोः ॥ श्रुतीनां सर्वसं सुकृतमप्यमूर्तं सुप्रनसां सुधासौंदर्यं ते सलिलमशि
 वं नः शमयतु ॥ १ ॥ वरिद्राणं देयं दुरितमप्यदुर्वीसनरुवदुतंडरी कुर्वत कदुपगतो दहृष

रणि॥ अपि द्वा गा विद्युद्वृमद ल नदी क्षा गुरु रि ह प्रका ह स्ते वरां (११) य म य म पा रां दे श तु नः
॥२॥ उद ज्य न्मा स र्य स्फु ट क प र हे रं व ज न ना क टा क व्या क्षे प क्षा ण उ नित सं क्षो भ नि व हाः
भवन्तु त्वि न्द्रः तो हर मि र सि गा ड्वा नु भ व स्तर ड्वा प्रो च्छ ड्वा दुरि त भ व भ ड्वा य भ व तां ॥३॥
स्मृ ति या ता पु सा म क र सु के न ना म पि च या ह र त्य त्त स्तं द्रा ति मि र मि व च न्तां शु सर णिः ॥
इ यं सा ते मूर्तिः सक ल सु र सं से व्य स ली ला म प्रो तः सं ता प त्रि वि ध म पि पा पं शु हर ता म् ॥४॥
त वा लं बा दं ब स्फुर द ल धु ग र्वे ए स ह सा म या सर्व व ता सर णि प्र थ नी ताः सु र ग णाः ॥ इ वा नी
मौ द स्य दि भ जे सि भा गी र थि त दा नि रा धा रो हा रे वि मि क थ य के षा मि ह पुरः ॥५॥
अ पि प्रा यं रा जं त ए मि व प रि त्य य स ह सा वि लो ल हा ती रं त व ज न नि ती रं श्रि त व तां ॥ सु
धा तः स्वा दी यः स लिल मि द मा तृ पि पि व तां तु ना ना मा नंदः प रि ह स ति नि र्वा ण प द वी
ता ॥६॥ प्र भा ते स्त्रो नां न प ति र म णी नां कु च त टो ग तो मा त र्या व न्मि ल ति स व तो ये
मृ ग म दः ॥ मृ गा स्ता व दै मा नि क श त स ह स्रैः प रि ल ता वि श न्ति स्वि कूं दं वि प्र ल व
पु षो नं द न व न म् ॥७॥ स्मृ तं स यः स्वा ते वि र च य ति णं तं स कृ द वि प्रा णं तं य सा पं रु हि
कि म व सा पं च ह र ति ॥ इ दं त ह गे ति श्र व ण र म णी यं र व लु प दं प्र प्र ण ण प्रा नै व द न के प्र
ला त र्हि ल स तु ॥८॥ य द न्नः खे ल त्तो ब ह ल त र सं तो ष भ रि ता न का का ना को धी श्र व र न ग र
सः कां क्ष म न सः नि सा लो का नां त नि म र्ग यो ना न ह र तं तं तं ती रं श्र म श म न धी रं भ
व तु नः ॥९॥ य त्सा क्षा दै र वि ग लि त नै दै र व सि तं न य सि तं

श्रीवाङ्मयप्रसरति मनोवामवसरः॥ निराकारं नित्यं नित्यं महिम्नं निवासितं मोविष्णुं यत्तत्संसारतटि
नित्यं न विषयः॥ १०॥ माहात्म्यैर्धर्मैर्बहुविध वितानैरपि च यत्तत्तन्मध्यं धोरभिः सुविमलत
पोरक्षिमिरपि॥ अचिद्वस्तु तद्दिद्योः पदमखिलजगत्साधारणतया ददानाकेनासित्वमिह तु
जन्या कथयन्॥ ११॥ नृणां ज्ञानमात्रादपि प्रविहरं स्यान्न बभूवं शिवपास्ते मूर्ते कइहम
हिमानं निर्गदतु॥ अमर्षम्लानायाः परमप्रभुरोधंगिरिभुवो विहाया श्रीकंठः शिरसि ति
घृतधारयति याम्॥ १२॥ विनिंद्यामुन्मूलैरपि च परिहाय एवैतवान् प्राणि
वायैः स पुलकप्रकाश्यानि पतितैः॥ हरहीनो कानां मानवरतमेनांसिक्रियतां काश्य
प्राज्ञात्वं गति पुनरेकाविति यसे॥ १३॥ स्वकीयलोको दवनित लोको हतयेतदा नृदम
न्यौ पदसि विनिबद्धापुरमिदा॥ अर्थे निलोभा नाप्रमिसि लोभां जुनयता गुणनाये
वायतव जननि दोषः परिणतः॥ १४॥ उदुग्धास्यं गुनप्रवृत्ति बधि रनुक्ति विकला
नम ह्यस्ता न स्तान खिलदुरित निस्तार सरणीम्॥ निलिपे निर्मृक्ता न पिच निर
यातं निपतितां नृणां वक्रातुं समिह परमं भेषतमसि॥ १५॥ स्वभावस्वच्छाना सह
सि शिराणामयमफामफारस्ते मार्तुं यतिमहिमा कोपितं ते॥ मुदायंगा ये त्रिदु
लमनवद्यद्युतिमतः समासाद्यापि स्फुटपुलकसाक्षाः सगरजाः॥ १६॥ कृतद्वै
नस्कानथ ऊदिति संस्पृष्टमनसः समुद्धतं सन्निविष्टं वनतले नीरार्जने न ह॥ १७॥
पि प्रायश्चित्तप्रसङ्गापपातीत चरितौ न रन्दरी केतुत्वमिह

श्रीगणेशायनमः॥ ॐ श्रीमद्दामरघूत्तंससच्चिदानंदलक्षणं॥ भवतंकुरुणावंतंगायेत्वानमसागिरा॥ १॥ वामे
 रीदलक्ष्यामेजानकीकनकोज्जला॥ भातिमध्येवतेमेघेविद्युत्लेखेवभास्वरा॥ २॥ त्वदन्यंनभजेरामनिःकामान्ये
 भर्जंतुतान॥ भक्त्येभ्योयेपुरादेवा आयुःकीर्तीप्रजाददुः॥ ३॥ भजनं पूजनंरामकृष्णामितरानिशां॥ प्रियंने
 छाभिसंसाराद्रयंविदतिमामिह॥ ४॥ रामरामेतिरामेतिवदंतं विकितंभवान्॥ यमदूतैरनुक्तं तं वत्संगौरिवधा
 वतु॥ ५॥ स्वच्छंदचारिणं दीनंरामरामेतिवादिनं॥ तावन्मामनुनिम्नेन पथाधारिवधावतु॥ ६॥ रामत्वं हृदये
 येषां सुरवंलभ्यं वनेपितैः॥ संजंवनवनीतंचक्षीरं सार्वमधूदकं॥ ७॥ प्रार्थयेत्वारघूत्तंसमाभूतमकादा
 वन॥ सद्रूपस्तीर्थेषु सर्वत्रपापेभ्यश्च प्रतिग्रहः॥ ८॥ श्रीरामजानकीजानेभुवनेभवनैवने॥ स्वभक्तकुल
 जातानामस्माकमविताभवा॥ ९॥ सर्वमदर्थंकुरुतोपकारं श्रीराममाकर्णयकर्णनित्यं॥ मूर्धन्नमालोक
 यनेवजिकेस्तुहिभुतंगतंसदंयुवानं॥ १०॥ ~~भवनंभवतंग~~ भवानरघूत्तंसतदेवतं मेयंसच्चिदानंदघन
 स्वरूपं॥ एकंपदं ब्रह्मवदंतिनित्यं वेदांतविज्ञानमुनिश्चितार्थाः॥ ११॥ भवत्कृपापांगविलोकितेन वैकुंठ
 वासःत्रियतेजनेन॥ स्नात्वाभवंतंशरणांगतोस्मियस्मात्परं नापरमस्तिकिंचित॥ १२॥ दिनानमवदत्तंकु
 लप्रसूताभवत्पदाराधनहीनचितान्॥ अनाथबंधोकरुणैकसिंधोपितेवपुत्रान्प्रतिनोजुषस्व॥ १३॥ भवा
 भवव्याघ्रभयारिभतंजराभिभूतंसहलक्ष्मणेन॥ सदैवमोरक्षतुराघवेशः पञ्चातुरस्तादधराददत्तात्॥
 १४॥ कामाद्यपथ्येन विवर्धमानंरोगं मदीयंभुवनामधेयं॥ दृशीकुरुत्वं यदहं त्रिलोक्यां भिषक्तमंत्वाभिष
 तांभृणोमि॥ १५॥ श्रीरामचंद्रः सज्जयंजयंतंकां सुरिद्रोणगिरौपयोधौ॥ यस्यप्रसादादभवत्वनमान्

निधानं धर्माणां किमपि च विधानं न व मुद्राप्रधानं तीर्थं न म मलपरिधानं त्रिगुणतः ॥ स मा धा
 नं वरे रणखलु तिरौ धानं धियां प्रियां धानं नः परिहरतु तापं तव सुपुः ॥ १८ ॥ पुरोधाय धावं
 इति एव दिग्गुणैर्लितं दृशं महिषानां नानातरं रुपावे स्थिति यत्तं प्रमेवायं मनुः सुहित
 एत ह दूर्तं इति यो वि योग स्ये म त र्थ दि ह क रू ए म न न ए म पि ॥ १९ ॥ मरुली ला लो ल ल
 रुति नु लितां भो त प ह न स व ल त्वां सु धा त द र म निल स त्कं तु म रुचि ॥ २० ॥ स सु व तः प द्या र
 जे दो रं द म रु तं बाल तु टिलं तु लं ते न लाल म म रु म म जालं तु र य ति ॥ २१ ॥ स सु व तः प द्या र
 म ए व द प द्या म ल न र वा नि वा सः कं द र्प प्र ति भ द त द न रु म व ने प्र या यं वा म गो ह स प तिस नि स्तार ए
 वि धौ न क स्या दु क र्ष स्ति व त भ नि दा ग ति तु ग ति ॥ २१ ॥ नो ग्रा यो त्र नो क य य त दि नानां क त म या
 पु र णं स ह र्द स र धु नि क प दो धि रु रु हे ॥ क या वा श्री भ तः प द कं म ल म द्या नि स लि लै स्तु ला ले
 य स्या त व त न नि द्य ये त क वि मि ॥ २२ ॥ वि ध तानिः सं कं नि र व धि स प्रा धि वि धि र हो सु ख रो वे रो
 तं ह रि र वि र तं न य तु ह रः ॥ २३ ॥ त प्रा य प्रि तै र ल म य त पो द न य तु नैः स वि द्धि का मा नां म दि तु ग ति भ व
 ता ॥ २४ ॥ त द्या क लित ह द यो मा त र म यं शि शु स प्रा प स्त्वा मा रु मि रु वि द ध्याः स मु चि त म ॥ २४ ॥ वि ली नो वै वै व
 स त न ग र को ला ह ल म रो म ता दू ता द रं को वि द पि प रे ता म ग यि तं वि द्या नां वा तो वि द ल य ति वी षी
 दि वि ष दं क या ते क ल्या णा य द व धि म ही मं ड ल म मा ता ॥ २५ ॥ स्फ र का म को ध प्र व ल र स सं जा त र
 दि ल ल वा ला ल लित व पु षा नः प ति दि ना ह र त्रा स ता प क म पि म रु न्ना स ल ह रि च टा च च सा यः क
 ॥ २६ ॥

एष स एषो दिव्य संरितः ॥ २५ ॥ इदं हि ब्रह्मा दंस कल भवना प्रो गम वनंतरैः यस्या तैरलुटति च
रितस्ति दुकमिव ॥ स एषः श्राकंठ प्रवितत तृतातृ नटितो ब्रह्मना संघात सवतृ ननता पंहरतुनः
॥ २६ ॥ कुपंते तीर्थी त्रिभुवन रित प्रिहय म्मोदुर विधौ करं कर्णे कुर्वन्सपि किल कपालि प्रभृतयः
॥ २७ ॥ मंते प्रा संवत् प्रिय मनुकं पादु हृदये पुनाना सर्वे जा प्रद्यं मथ नद पंदल पमि ॥ २८ ॥ प्र
३ फा कानां ब्रातै रमित बिचि किस्सा विचलितैः विभुक्ता ना मे कं किल सद न मे नः परिषदां ॥ प्र
हो मा प्रकृतं त ननिर्घ टयं त्याः चरि करं त वग्ना ची कर्तुं कथमिह स प्रयो नर मप्युः ॥ २९ ॥
न कोप्ये ता वतं बलु सप्र य मा रभ्य प्रलितो दुःख रा रा रा द भ वति त्रातो विस्मय भ यः
॥ ३० ॥ इति मा प्रिहांते प्रनसिधिर को लं स्थितवति मयं संप्रा सो हं स फल पतु मे व प्र ण यतः ॥
॥ ३१ ॥ प्रवृत्ति व्या संगो नि यत मप्य प्रिष्ठा प्रलयनं कुतर्कं पु भ्या सः सतत्पर पे प्रु यं मनुनं ॥
सुचि प्रा वं प्रा वं मम तु पु नरे वं विधु गुणान्ते व को नम द ए म पि निरी दो त द न म ॥ ३२ ॥ विना
न ला भ्या मा भ्यां किमिह न य ना भ्या खलु फलं को नम द ए म पि निरी दो त द न म ॥ ३३ ॥ विना
म यं हि न्य को रो तु व नि म नु त्प्रा व ए को र्थ यो न म यो प्रा मा ला ठा पर म र म ए जा त वंतुः ॥ ३४ ॥
स्विक दं संर पु र मयं ते सु कति मः पं ति द्रा क पा कं सि बल हरि नी ला का लः ॥ ३५ ॥ वि प्रा नैः
॥ ३६ ॥ त सि नं प्रु म म मू तौ प्र व पदे न य वृ त्ती ला रा म त म नु ता ण क लु षा ॥ ३७ ॥ अ पि द्यौ
हो वि प्रा न वि रत मुष नो गुरु स ती पि व तो मे र यं न र व ह र त द्य क न क म ॥ वि हा य त्वे यं ने त नु
त म नु दाना ध र त्वा मुष र्थं व को ड म्मि ल स र स भा र त द्य क न क म ॥ वि हा य त्वे यं ने त नु
त यः सु म सां ज णा दे व प्रा णा ना वि वि र रु ण स द त भ त्ता म् ॥ त्व ही यो ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ म्म सौ र म्म हर ति स त
॥ ४० ॥

नो लीला च लित लहरी मां वति केश पुनीते सोपि द्राम ह ह प व लान सिधु व न म ॥ ३५ ॥ कि य त्तः स त्र्ये के नि
य त मि ह लो का र्थ लू ट काः प रे पू ता सा नः क ति च प र लो क प्र ए थि नः ॥ सु खं पो ते मा त स त व र व लु क
पा तः पु न र यं उ ग न्ना थः श म्भु त्वा पि नि हि त लो क ह य म रः ॥ ३६ ॥ भ व त्पा हि वा त्या ध म प ति त्वा प षा ड
प रि ष त् प रि ए स्त्रि ह म्भु त्वा पि त्वा म श क्यः ख लु प थ्या ॥ म मा यो वं प्रे मा दु रि त नि व हे षु व त् न नि स्त्र
भा वा यं स वै र पि ख लु प तो दु ष्ट ति ह रः ॥ ३७ ॥ प्र दो षा र्त्त न स्य स्यु र म य न ली लो रु स त्ता त दा भो ग पे
ख लु ह रि भु त्त सं ता न वि ध तिः ॥ वि ल को ड की ड जु ल ड म रुं का र सु भ ग म्भि शे ध त्ता ता पं चि द पा त ति
नि तां ड व वि धिः ॥ ३८ ॥ स दै वं तै यै ब र्धित क राल चि ता भ र मि मं प दि त्वा म ब त्त त सि म म यो
मि म्भु वि ष म्भुः ॥ ३९ ॥ त दै वि श्वा मो यं चि भु व न त त्ता द स्त म य ते नि रा ध्या ग चे यं भ वा ति ख लु नि वी
दु त्त क रु णा ॥ ४० ॥ क प दी प्ति म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
ए ॥ ४१ ॥ भ वा म्भुः सा प क्ता म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
यः ॥ ४२ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ४३ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ४४ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ४५ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ४६ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ४७ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ४८ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ४९ ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र
॥ ५० ॥ प्र प य तै लो का स्फु रि त न य न को म्भु त्वा प्र ए थ मि ल द र्श डु यु व तैः उ रा रेः प्रे ख न्यो म्भु ल त र स म्भु त्त म र

इत्तमस्तु ॥



[The manuscript page contains dense handwritten text in Devanagari script, likely from a historical record or legal document.]

मकुतमुकुतानाहुम बतीविनाप्रुषिलोकेनपरमवलोकैहितकरमा॥५॥ पयः पीताम्रातसुवसय
दिमातः सहचरैः विमूकैः संरुंकेचिदधिप्रविश्राप्तिमरासमा इदानीमुत्सहे प्रतुपवनसंचारशिकि
रचिरादुन्निद्रं प्रोसदयुहदपेणपमचिरमा॥४५॥ अथादिगेवद्रुतिपरमणीयपरिकरंकिरीटका
लेंदुनि यमयपुनः पनंगलौ॥ मकुर्णस्वहेलाप्रितरुनसाधारणधिपावृजनाप्रुष्यायंसुरसुम
समृद्धारसप्रय॥४६॥ शरच्चंदमेतांशसिस्कलरोभाहममकुटाकरैः कुंचातोतेवरमयनि
राहोचदधतीमुधाधारकाभरणवसनोपेतप्रकरणितांतांभ्यायं सुदयतिवतेजंय
विभव॥४७॥ दूरसितसुमनससहदनकानि पूराप्रतैः भवत्वत्तमर्तिताममिराम
प्रुतंयसीनगन्याविदेकमयचक्रिकाचमरुहितलतीतनोतुप्रमणानुनोसंपदिसंरुके
इहेतुना॥४८॥ अथैमीलितमौषधैः मुकुलितं वसंतसुराणांगलैः सुसमाद्रुसुचारसैर्व
गतिहंगारुत्तमैर्गवभिः॥ कीचिन्नालितकालिप्रहितपदेखलोकेककुलीलिनीलंतापंतिर्या
धुनाप्रममवद्यालावलीठामन॥४९॥ धुतेनागेंद्रुकुक्षीप्रमृण्यगैएफणिश्रेणिनंकीदु
प्रुत्तसर्वसंहरचित्वा स्वयमप्यप्रजिदादाकपणीकर्तुकाये॥ साकृतेहेमचत्तामृदल
हसितयादिनासुवीबद्यालोलीलासिचंचलुहरिचनघटातादवनः पुनानु॥५०॥ वि
प्रुषितामगारपुत्रमाद्रुमः कृतात्रेकतुनाहंमं॥ मनोहरसुंगचतरंशांगमममाद्रुम
मात्मीकेशतु॥५१॥ इतोपीयूषलहरीतमनायेननिर्मितायः पठेत्तस्यसर्ववृतापंतेतुयसं
पदः॥५२॥ इतिश्रीमलंडिरातुनवृतापविचितेयमद्रुलहरिसुमाद्रु॥ ३३

भागीरथीसौत्रप्रारंभः॥ देवीसुरेश्वरीप्रभवति गंगेविभुवनतारिणितरलतरंगेण
 करमौलिनिवासिनीविमलेप्रमतीरास्तातवपदकमले॥ भागीरथिसुखदायीनिमा
 तस्तेवजलमहिमानिगमस्यातः॥ नृहंतानेतवमहिमानपाहिकुपामपिमासना
 न्नहारिपदमदातरंगिणीगंगेहिमवद्युमुक्ताधवलतरंगे॥ दूरीकरीप्रमदुक्तभा
 रंकुरुकुपयाभवसागरपारं॥ तवजलममलंयेनचपीतंकुलपदंखलुतेनगह्वी
 5 तंमार्तगंगेत्वयियोमलःकिलतदुच्यतेनयमःसक्तः॥ पतितोहारिणिज्ञानुविजंजे
 स्वेदितगिरिवरमंडितरंगे॥ लोचनंरुननायमदपिपतितःकस्मादृष्टमदिवं
 यातः॥ ५॥ कपुलतामिवफलदात्रीकेधनेमहियस्त्वनपततिशोके॥ त
 वप्रयाचेतस्तोतस्तः॥ पुनरपि तदरेकोपिनज्जम्॥ ६॥ पारावारविरा
 रिणीगंगविबुधवधूकुचकुमुपिजे॥ नरकतिवारिणिमिलनेरे॥ हवि
 रिणीगंगेति किलतवतीरे॥ ७॥ तवप्रयसानहिहोमोदःकण्ठमिरुमृदुह
 कयविरुमातगंगेकिलिजर्मेविद्युविनाशिनित्वहृष्टतुंगे॥ ८॥ परिल
 संहर्तुजलतरंगेद्वयजयज्ञानुविकरुणापांगे॥ इंदुमुकुटमणिरात्रितचरणे
 10 सुखदेभुभदेसंवकचरणे॥ गंगेदेवकेपापंतापंहरमेज्ञानुविकुमतिक्लला

के॥ त्रिभुवनसारे वसुधा सारे हरे लक्ष्मसि गति मेख लु संसारे ॥१०॥ हे लक्ष्म नंदे परमा
 नंदे कुरु प्रथि कुरु एण मुनि गण वंदे ॥ तव तट नि कटे यस्य नि वासः खलु वै कुंटे तस्य
 विलासः ॥११॥ वर मिह नारी रे क म टो मानः किं वा ती रे शर दो दी नः ॥ प्रथ गव्यू तो प्रप चो
 ही नो दू रे नृ पतिः स व न कु भा नः ॥१२॥ भो भुवनेश्वरी पुण्य धन्य देवी द्वौ प्रथि मुनि व
 र वं ॥ गंगा स्त व मिद म सि व लं मि न स्यं प ह ति न ये यः स नृ य ति नि तं ॥१३॥ एषो ह
 द ये गंगा भ किं स्तेषां भ व ति न मुख दौ मुक्तिः ॥ मधुर कां ति पदे पद झटि का निः प र मा
 नं द क लि त त्व मि ति ॥१४॥ गंगा स्तो त्रे मिद ख लु भ व सारे वी र्य ति फ ल दं वि हि त मु द
 दं ॥ शं कर से व कृ पा क र र चि तं म ह त्तो वि ष ये भ व ति म प्रा तं ॥१५॥ इति श्री म
 ध्व क र चार्य वि र चितं गंगा स्तो त्रं संपु र नं ॥

नं १४९५-ग

गंगा स्तोत्र

उपदे

स्तोत्र - संपूर्ण

कवि - श्रीशङ्कराचार्यः

नं० ६४६-घ